प्रारम्भिक सम्बोधन

पंचदश बिहार विधान सभा के त्रयोदश सत्र के शुभ अवसर पर मैं आप सबों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ ।

विश्व के महानतम लोकतांत्रिक देश के लिए जन-प्रतिनिधियों के चुनाव के उपरान्त हम सब यहां एकत्र हुये हैं । जन प्रतिनिधि जनता की आशाओं-आकांक्षाओं और उनकी आवाज का प्रतिनिधत्व करते हैं, जिससे उनके नेतृत्व योग्यता का जन-जीवन और सोच पर गहरा असर होता है । हम सब के सामने सबसे बड़ी चुनौती केवल आम लोगों के भौतिक सुख, समृद्धि और सामाजिक न्याय के तहत अधिकार प्राप्त कराने का ही नहीं है, वरन् आज नैतिक मूल्यों की स्थापना करने की बड़ी जिम्मेवारी है और इन्हीं जिम्मेवारियों को पूरा करते हुये बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने अपने पद से त्याग कर लोकतांत्रिक मूल्यों का कीर्तिमान स्थापित किया है, जो इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा । हमारे बीच महादलित समाज के ओजस्वी एवं निष्ठावान राजनेता श्री जीतन राम मांझी ने मुख्यमंत्री के पद की जिम्मेवारी ली है । स्वर्णिम बिहार, विकसित बिहार, बढ़ते बिहार के निर्माण के लिए हम सभी की सामूहिक जिम्मेवारी है कि हम आपसी भेद-भाव भूल कर राज्य में साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, धोखा और नफरत को मिटाने, राज्य में सुख-शांति एवं सद्भावना बनाए रखने तथा राज्य के विकास के लिए निःस्वार्थ भाव से भागीदार बने ।

आज सदन के सामने वर्तमान मंत्रिमंडल में विश्वास व्यक्त करने का प्रस्ताव विचाराधीन है, जिस पर हम सभी चर्चा में भाग लेते हुये संसदीय व्यवहार की भूलभूत मान्यताओं और सिद्धान्तों को अपनाकर संसदीय प्रणाली को मजबूत करेंगे ।

मुझे आशा और विश्वास है कि सत्र के सफल संचालन में आप सभी का सहयोग प्राप्त होगा ।